## पद १०७

(राग: भूपजिल्हा - ताल: एक्का)

आज विटेवरी नीट विठ्ठल सखा देखियला गे। भाळिं गंध केशरी तिलक कस्तुरी रेखियला गे।।ध्रु.।। शिवाकार मुकुट मस्तकासि फार शोभतो। कुंडलाचें तेज पाहुनि रवि लाज वाटतो। शोभे नासिक कर्ण नेत्र आकर्णवदन हासतो। तुळसि हार भार फार अंग झांकियला गे।।१।। कासे कसे पितांबर ठेवि कर कटेवरी।

शंख चक्र दोन्ही करी हरी प्रीतिनें धरी। गळ्यामाजि वैजयंति माळ शोभती बरी। उरीं धरी लाथ जेवि भृगुनें झोंकियला गे।।२।। कडकडोनि माणिकदास विठ्ठलासि भेटले। सद्रदित कंठ होउनि नेत्रि अश्रु दाटले। अंतरीचे हेत हेचि आज सर्व फीटले। प्रेम भाव हेचि अबिर वरी फेकियला गे।।३।।